



-‘एसाइक्लोपेडिया ऑफ हिन्दूज्म’ के विमोचन के अवसर 3 अप्रैल को हरिद्वार में समारोह को संबोधित करते हुए आचार्यश्री रूपचन्द्र जी में पर अन्य- स्वामी सत्यमित्रानन्दजी, स्वामी अवधेशानन्दजी, शंकराचार्य स्वामी, दिव्यानन्दजी, स्वामी गुरुशरणानंदजी, स्वामी चिदानंदजी, श्री दलाई लामाजी आदि।



-पूज्य गुरुदेव के साथ वार्तालाप-प्रसंग पर श्री अडवाणीजी, अभिनेता विवेक ओबेराय, श्री सुभाष तिवारी, सौरभ मुनि, अरुण तिवारी आदि।

**प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)**  
जैन आश्रम, रिंग रोड, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,  
पो. बो.-3240, नई दिल्ली-13, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

# रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका



प्रदूषण-मुक्त गंगा अभियान पर परमार्थ निकेतन, ऋषिकेश द्वारा आयोजित 4 अप्रैल 2010 समारोह में ‘स्पर्श गंगा’ पुस्तक के विमोचन का एक दृश्य। बायें से- आचार्य रूपचन्द्रजी, श्री बी.के. मोदीजी, भाई साहिब खालसा सतपाल सिंह, श्री सुन्दरलाल बहुगुणा, श्रीमती एवं श्री अडवाणी जी, बाबा रामदेव जी, दलाई लामा जी, स्वामी चिदानंद सरस्वती जी, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री निशंकजी, स्वामी अग्निवेशजी, शंकराचार्य स्वामी दिव्यानन्द तीर्थ आदि।

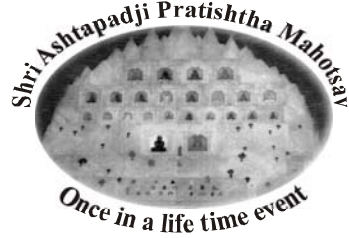


# JAIN CENTER OF AMERICA, INC.

43-11 Ithaca Street, Elmhurst, NY 11373, USA

Website: www.nyjca.org ~ e-mail: Info@nyjca.org

Tel: (718) 478-9141 Pratishtha Tel: (718) 360-8972 Fax: (718) 478-9144



April 18, 2010

To Pujya Shri Roopchandji Maharaj Saheb  
Jain Mandir Ashram ring rd, Opp. Saray Kale khan Bus Terminal, Behind Petrol  
pump,  
New Delhi - 110013  
India

Respected Pujya Shri Roopchandji Maharaj Saheb,

Vandana

Jain Center of America, Inc. New York, USA (JCA) is celebrating Shri Ashtapadji  
Pratishtha Mahotsav at our center in New York from June 10<sup>th</sup> to June 21<sup>st</sup>, 2010.  
Installation of Crystal Mountain was completed in June 2009 and now installation  
of 24 Tirthankar gemstone Pratimaji (Shri Chovisi) in various gokhalas' carved in  
the crystal mountain will be taking place. This is a very special kind of Pratishtha,  
which has never taken place in the history of Jainism.

With a great pleasure and honor Jain Center of America, Inc. New York invites  
you to this momentous occasion. Your presence and blessings for this once in a  
lifetime event will be greatly appreciated by the members of the Jain Center of  
America, Inc. New York, USA.

Your visits to our center has always been a blessing and guidance to JCA in  
making progress and wellbeing of this unique center with unity in diversity. JCA  
will be pleased to make all necessary arrangements. Please send your blessings  
with a positive reply.

Convener  
Ashtapad Pratishtha Committee

## रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका  
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क  
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी  
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी  
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैकाक  
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो  
श्री नरसिंहदास विजय कुमार वंसल, लुधियाना  
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर  
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,  
अहमदगढ़ वाले, बरेली  
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत  
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर  
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं  
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली  
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी  
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली  
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली  
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा  
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत  
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा  
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार  
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मिच्छल, मोगा, पंजाब  
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब  
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री वीरबल दास सिंगला,  
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर  
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़  
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल  
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र  
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला  
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब

डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास  
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास  
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन  
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी  
श्री प्रवीण लता मेहता ह्युष्टन  
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा  
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन  
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार  
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट  
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश वंसल, मुक्कर  
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई  
श्री कमलसिंह-विमलसिंह वैद, लाडनूं  
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम  
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर  
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद  
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली  
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा  
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़  
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर  
श्री देवराज सरोजवाला, हिसार  
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार  
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद  
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा  
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा  
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले  
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता  
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर  
श्री आदीश कुमार जी जैन,  
न्यू अशोक नगर, दिल्ली  
मास्टर श्री वैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार

# रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 10

अंक : 06

जून, 2010

इस अंक में	
<b>: मार्गदर्शन :</b> पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी	01. आर्ष वाणी - 6
<b>: सम्पादक :</b> श्रीमती निर्मला पुगलिया	02. बोध कथा - 6
<b>: सह सम्पादक :</b> श्री मनोज कुमार	03. संपादकीय - 7
<b>: व्यवस्थापक :</b> श्री अरुण तिवारी	04. गुरुदेव की कलम से - 8
एक प्रति : 5 रुपये	05. चिंतन-चिरंतन - 14
वार्षिक शुल्क : 60 रुपये	06. सत्य-कथा - 16
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये	07. गीतिका - 17
<b>: प्रकाशक :</b> मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.) पोस्ट बॉक्स नं. : 3240 सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013 फोन नं.: 26315530, 26821348 Website: www.manavmandir.com E-mail: contact@manavmandir.com	08. प्रलय के संकेत - 18
	09. गजल - 20
	10. स्वास्थ्य - 21
	11. कहानी - 23
	12. दृष्टिकोण - 25
	13. चिंतन-मनन - 26
	14. चुटकले - 27
	15. कहानी - 28
	16. बोलें-तारे - 29
	17. समाचार दर्शन - 31
	18. संवेदना समाचार - 34

आर्ष वाणी

अभिमानं सुरा-पानं, गौरवं घोर रौखं  
प्रतिष्ठा शूकरी-विष्ठा, त्रीणि त्यक्ता सुखी भवेत्

अभिमान सुरा-पान के समान है, गौरव घोर रौख के समान है, प्रतिष्ठा सूअर-विष्ठा के समान है, तीनों की आकांशा को छोड़कर सुखी जीवन जिएं।

-आदि शंकराचार्य

बोध-कथा

धर्म की विडम्बना

यह उस समय की बात है जब कोलकाता में प्लेग के कारण त्राहि-त्राहि मची हुई थी। शायद ही ऐसा कोई घर बचा था जिसमें इस रोग का प्रकोप न हुआ हो। रोग से प्रभावित घरों के सभी सदस्य हैरान परेशान मरीज की तीमारदारी में जुटे हुए थे और स्वयं को बचाने के लिए प्रयासरत थे। ऐसे में स्वामी विवेकानंद और उनके कई शिष्यों ने मोर्चा संभाला। वे दिन-रात रोगियों की सेवा करते और गली बाजार की सफाई करते। इसके अलावा वे बीमार लोगों को दवा उपलब्ध कराते और उनके परिजनों को सांत्वना भी देते। तभी शहर के पंडितों की एक मंडली स्वामी जी के पास आई और उसने कहा स्वामी जी आप यह ठीक नहीं कर रहे हैं। इस धरती पर पाप बहुत बढ़ गया है। इसलिए भगवान महामारी के रूप में लोगों को दण्ड दे रहे हैं। आप लोगों को बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसा करके आप ईश्वर के कार्यों में बाधा डाल रहे हैं। यह सुनकर स्वामी जी गंभीरता पूर्वक बोले- माननीय पंडितो, पहले तो आप सबको नमस्कार करता हूं। आप सब यह तो जानते ही होंगे कि मनुष्य इस जीवन में अपने कर्मों के कारण कष्ट और सुख पाता है। यह भी आप जानते होंगे कि जो कष्ट से पीड़ित लोगों के घावों पर मरहम लगाता है और उसके कष्टों को दूर करने में मदद करता है वह स्वयं ही पुण्य का भागी बन जाता है। अब यदि आपके अनुसार प्लेग में पीड़ित लोग पाप के भागी हैं तो हमारे मित्र इनकी मदद कर रहे हैं वे पुण्य के भागी बन ही रहे हैं न। क्या आप इन्हें पुण्य कार्य करने से रोकना चाहेंगे। इस संदर्भ में आपका क्या कहना है। स्वामी जी की बात सुनकर सभी पंडित भौचक रह गए और चुपचाप सिर झुकाकर वहां से चले गए। स्वामी जी और उनके शिष्य फिर से अपने काम में लग गए।

## दीर्घ जीवन की अभिलाषा

सृष्टि का हर प्राणी जीना चाहता है। मरना कोई नहीं चाहता। छोटे से छोटा कीड़ा बड़े से बड़ा हाथी सभी जीवों को जीवन प्रिय है। मृत्यु से सब घबराते हैं। कष्टों से भरा जीवन स्वीकार्य है लेकिन मृत्यु किसी भी हालत में वांछनीय नहीं है। यहां तक कि यदि कोई शिकारी पक्षियों तथा पशुओं का शिकार करना चाहता है तो वे पशु-पक्षी भी हर हालत में उससे बचने की कोशिश करते हैं।

जीवन से इतना मोह क्यों है? जबकि जीवन तो दुखों से भरा हुआ है। जन्म-मृत्यु वृद्धावस्था और बीमारी सब एक से बढ़कर एक कष्टकारी हैं। बच्चा जन्मते ही खूब जोर-जोर से रोता है। वह क्यों रोता है क्योंकि वह बहुत कष्ट से गुजरता है। बच्चे को तकलीफ होती ही है। बच्चे की मां को भी भयंकर कष्ट से गुजरना पड़ता है। फिर भी वृद्धि की चाह पशु-पक्षी व मानव आदि सभी प्राणियों में होती है।

जन्म की तरह व्याधि भी बड़ी दुखदायी है, कितनी-कितनी बीमारियां इस शरीर को घेरती हैं, दमा, जुकाम, खांसी, टी.बी., लकवा, कैंसर जैसी भयानक बीमारियों में सड़ना कलपना मंजूर है पर मरने के लिए कोई तैयार नहीं। कई बच्चे शुरू से ही व्याधिग्रस्त होते हैं। अपंग बीमार और असहाय होते हैं। इस हालात में भी जीना चाहते हैं। किसी के हाथ पांव काम नहीं करते, किसी की जवान काम नहीं करती, ऐसी विवशता की हालत में जीना स्वीकार्य है। मृत्यु से सब घबराते हैं। जीवन में जरास्था यानि बुढ़ापा कम कष्टदायी नहीं है। किसी के घुटने जबाब दे देते हैं। किसी को दांतों की तकलीफ है। किसी के कान बेकार हो जाते हैं। किसी की आंख की ज्योति कमजोर हो जाती है। किसी की आंते इतनी दुर्बल हो जाती हैं कि खाना भी हजम नहीं होता है। जब अपना शरीर काम नहीं करता तो परिवार भी उदासीन हो जाता है। मित्र, पड़ोसी, सगे-सम्बन्धी भी कोई रूख नहीं जोड़ते ऐसा तिरस्कृत उपेक्षित जीवन जीना स्वीकार है, फिर भी व्यक्ति मरना नहीं चाहता।

पता नहीं इस जीवन से इस शरीर को इस परिवार से क्यों व्यामोह है कि इंसान इनको छोड़ना ही नहीं चाहता। शरीर छोड़ना इतना आसान नहीं है। शरीर छोड़ते समय कितनी पीड़ा होती है यह मृत्यु के मुंह में गया हुआ व्यक्ति ही जानता है। इतना सब कुछ होते हुए भी प्राणी जीवन-मरण से मुक्त होना नहीं चाहता। इस जन्म-मरण के चक्कर से निकलना नहीं चाहता। जो व्यक्ति दीर्घायु होना चाहते हैं शतायु होना चाहते हैं उनका लम्बे जीवन की कामना के पीछे क्या उद्देश्य है? एक नीति का बड़ा मार्मिक वाक्य है 'मुहूर्त ज्वलितं श्रेयो न च धूमयितं चिरं'। ज्वलित और प्रकाशमान जीवन चाहे छोटा भी हो वह युगों-युगों तक अपनी रोशनी फैलाता है। जैसे महावीर, बुद्ध आदि भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। ईसा मसीह की हत्या बहुत छोटी उम्र में कर दी गई थी। किन्तु उनके प्रेम भाईचारे और सेवा भावना ने पूरे विश्व को बांध रखा है।

आदि शंकराचार्य ने 33 वर्ष की उम्र पाकर भी ऐसा नाम कमाया कि जो जन-जन के लिए अनुकरणीय है। विवेकानंद ने कौन सी लम्बी उम्र पाई थी, वे भारतीय संस्कृति को विदेशों तक में फैलाने वाले प्रथम व्यक्ति थे। जितना जिएं ज्योतिर्मय जीवन जिएं धूमिल जीवन लम्बा जी लिया तो कौन सा किला फतह कर लिया है।

○ निर्मला पुगलिया

## महावीर और पैसा



○ गुरुदेव की कलम से

आदमी जब से पैदा हुआ उसे रोटी, कपड़ा और आश्रय स्थान की आवश्यकता रही। रोटी खाने के लिए तथा कपड़ा, आश्रय व स्थल प्रतिकूल मौसम से बचने तथा विश्रान्ति के लिए ये जीवमात्र की आवश्यकताएँ हैं। प्रकृति ने पशु जगत को शरीर के साथ ही वस्त्र दे दिए हैं। भोजन एवं आश्रय की आवश्यकता उनको भी होती है जो प्रकृति से पूरी करते हैं। मानव की भी आवश्यकता पूर्ति का स्रोत प्रकृति ही है। खाद्य जमीन से पैदा होता है, वस्त्र के लिए कपास जमीन से ही पैदा होती है। तन के लिए पशुओं के केश काम आते हैं, वे जमीन पर ही पैदा होते हैं, वहीं आश्रय या पोषण पाते हैं। रासायनिक तत्त्व भी जमीन से ही प्राप्त होते हैं। जमीन के अलावा आदमी के लिए या किसी जीवधारी के लिए अन्य स्रोत नहीं है।

## व्यवस्था के नाम पर स्वामित्व की दीवारें

यह जमीन आदमी की जननी है। उसका कोई स्वामी नहीं, न आदमी न जानवर। लेकिन आदमी जब निश्चित जीवन पद्धति पर आया, सभ्यता का निर्माण हुआ तो व्यक्तिगत या सामूहिक ताकत के बल पर जमीन पर अधिकार करने लगा और दूसरों को अपनी जमीन का लाभ लेने से रोकने लगा। गांव बसे, शहर बसे, नगर और देश बसे। सीमा रेखाएँ बनीं। आज इन सीमा रेखाओं में बंध गया है सारा संसार। दूर देश मालिक है अपनी जमीन का। हर प्रान्त मालिक है अपनी जमीन का। अपनी जमीन से जो पैदा होता है वह उसका, दूसरे की जमीन से जो पैदा होता वह दूसरे का। जीवन ज्यादा पेचीदा हुआ। आवश्यकता बढ़ने लगी। उनकी पूर्ति के साधन भी बढ़े। एक व्यक्ति या परिवार सब कुछ न बना सका। कार्य का विभाजन हुआ। वस्तुओं का आदान-प्रदान हुआ। माध्यम बना विनिमय। विनिमय में एक कठिनाई थी, कम या अधिक, स्थिर मापदण्ड नहीं था। एक माध्यम चाहिए था। एक वस्तु जिसके विनिमय में कुछ भी पाया जा सके तथा कुछ भी विनिमय में देकर जिसे खरीदा जा सके। पैसा एक ऐसा माध्यम बना। विनिमय व्यवस्थित हो गया, भाव तय हो गए। व्यापार

का जन्म हुआ। सब कुछ पैसे के विनिमय में सुलभ हो गया। वस्तु के लिए पैसा चाहिए। पैसे के विनिमय में वस्तु मिलने लगी। जिसके पास वस्तु नहीं वह श्रम के विनिमय में पैसा पाने लगा। मालिक और नौकर बने, कारीगर और उद्योगपति बने। आदमी वस्तुओं को खरीदने-बेचने का साधन बन गया। दासप्रथा बहुत अमानवीय लगी। मानव की संवेदना ने विद्रोह किया। सहस्राब्दियों तक यह प्रथा चलकर समाप्त हो गई। शरीर का क्रय-विक्रय बन्द हुआ प्रत्यक्ष रूप में। अप्रत्यक्ष रूप में चालू रहा। श्रम के रूप में शरीर बिकने लगा। व्यक्ति शरीर बेचता था। तब भी साधन था वस्तु मात्र। व्यक्ति श्रम बेचने लगा तब भी साधन रहा वस्तु मात्र। वेश्या शरीर बेचने लगी, पैसा पाने लगी। शरीर सुख का साधन बन गया। शरीर, श्रम, सुख, सहयोग सब बिकने लगा। सैक्स भी बाजार में आ गया वस्तु बनकर। जो प्यार की कीमत पर लिया दिया जाता था पवित्र भाव से, प्रजोत्पत्ति का उपादान बनाया था जिसे प्रकृति ने। वह देह स्नायु तृप्ति का हेतु बना और बिकने लगा पैसे की कीमत पर। पैसा पैसे को खरीदने लगा, वस्तु को खरीदकर वस्तु रूप में अधिक पैसों में विक्रय कर और संगृहीत होता गया। संगृहीत धन से श्रम खरीद कर वस्तु रूप में, पैसा पैसे को कमाने लगा। श्रम गौण बात हो गई। मूल रह गया पैसा। संग्रह हुआ और संग्रह की लिप्सा बढ़ती गई। अनैतिकता, भ्रष्टाचार और अत्याचार के नए-नए प्रारूप सामने आने लगे। जब जीवन पिसने लगा, विषमता बढ़ने लगी, एक तरफ संग्रह ने विलास और अपव्यय को जन्म दिया दूसरी ओर शोषण तथा विषमता को निरन्तर विस्तार मिलने लगा। एक ओर गगनचुम्बी अटटालिकाएँ खड़ी हो गईं। वातानुकूल प्रेक्षागृह बने। सुरा-सुन्दरी का जमाव होता गया ओर दूसरी ओर झोपड़ियाँ उजड़ने लगीं। शरीर नंगे और क्षुधा जर्जर होते गए। जीवन के मूलभूत साधनों के विनिमय का स्रोत जीवनघाती बन गया। आज पैसे का आयाम तीव्रता से फैल रहा है। आदमी छोटा होता जा रहा है। महल खड़े हो रहे हैं। झोपड़ियाँ जल रही हैं। मदिरालय वातानुकूलित हो रहे हैं और लार्शे सड़कों पर सड़ रही हैं। मिटाइयों के ढेर पर कुत्ते खेल रहे हैं और आदमी दूसरे की जूटन खाने को विवश हो गया है। निओन बल्लियों से महानगर के चौराहे जगमगाते हैं और कूड़ों के ढेर पर नर कंकाल अन्न के सड़े गले दाने बीन बीनकर खा रहे हैं। यह पैसा जो जीवन का साधन था सारे समाज के लिए, बहुसंख्यक समाज की मौत बन गया। व्यक्तिगत स्वामित्व जो बर्बर युगीन पाशविक शक्ति राज्य (माईट इज राइट) को मिलाकर समाजिक जीवन में न्यायपूर्ण संविभाग का साधन था,

आज मानव मात्र की विपन्नता, शोषण, अन्याय एवं मरण का शस्त्र बन गया है। प्रकृति से दूर जाकर मानव ने स्वामित्व की सृष्टि की। स्वामित्व ने पैसे को जन्म दिया व पैसा मौत बन गया है मानव का। वह वर्ग-भेद, वर्ग-घृणा और वर्ग-संघर्ष का हेतु बन गया है।

### **यन्त्र मानव का सबसे बड़ा शत्रु**

मार्क्स ने उस समय जन्म लिया जब यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति हुई थी। अब तक मानव श्रम प्रतिद्वन्दी पशुश्रम था। मानव श्रम उससे श्रेष्ठ था क्योंकि मानव में कुशलता थी पशु में नहीं। मशीनें बनीं। मानवीय कुशलता ने जन्म दिया मशीनों को तथा बौद्धिक परिपक्वता ने जन्म दिया यन्त्रों को। यन्त्रों का परिस्कार करता गया मानव अपनी कुशलता से। जो कुशल श्रम मानव का एकाधिकार था वह उससे छिन गया। परिमाण सहित यन्त्रों की श्रम कुशलता मानवीय श्रम से अधिक महत्वपूर्ण तथा सस्ती थी। क्योंकि उसके लिए कच्चा माल कोयला या बिजली उपलब्धता थी। लोहा और कोयला मानव के मित्र बनकर आए और शत्रु बन गए। यन्त्र मानव के सहायक बनकर आए मौत बन गए। मानवीय श्रम का मूल्य घटता गया। क्योंकि यन्त्रों ने स्थान लेकर उसकी आवश्यकता कम कर दी। यन्त्रों का श्रम सस्ता भी था जितना कि मानव श्रम हो नहीं सकता था। क्योंकि रोटी कपड़ा और आवास देना अनिवार्य था। उसका श्रम खरीदने के लिए उसे कम से कम जिन्दा रखने के लिए। वह जीवन साधन था श्रम का। उसके प्रति भावात्मक लगाव या मानवीय संवेदना नहीं थी। अन्य साधन मिलते गए। उनकी आवश्यकता कम होती गई। उसकी उपेक्षा बढ़ती गयी। आदमी यन्त्रों के साथ प्रतिस्पर्धा में हार गया। वह जीवित रहने के लिए आधा पेट खाने को चिथड़े पहनने को भी तैयार हो गया। पर यन्त्र अधिक सस्ते थे वह फिर भी महंगा था। बेकारी बढ़ती गयी। भूख बढ़ती गई। आवश्यकता की चीजें कालाबाजार में अधिक कीमतों पर बिकने लगी। तस्कर व्यापार होने लगा मिलावट होने लगी। पैसे की कीमत कम होती गई। पैसे के लिए अकालों की कृत्रिम अभावों की सृष्टि होती गई। लाखों आदमी चावल के गोदामों में बन्द कर मार डाले गए केवल एक प्रान्त में। यह हमारे ही देश की घटना थी। संसार के अन्य देशों में भी पैसे के लिए मानव की इतनी क्रूरता की मिसाल शायद ही मिले। महल बनते गए। विलास बढ़ता गया। अपव्यय बढ़ता गया, सामाजिक लेन देन का स्तर बढ़ता गया। अपव्यय बढ़ता गया कुरीतियाँ बढ़ती गईं। व्यसन बढ़ते गए। इन सबमें पैसे का व्यय बढ़ने लगा। आय न्यूनतम से न्यूनतम होती जा रही है।

## **व्यक्तिगत स्वामित्व का निषेध**

मार्क्स ने यह सब देखा। उसका हृदय कराह उठा। पूरे मानवीय इतिहास की उसने नयी व्याख्या की। पैसे के जन्म से लेकर आज तक की उसकी राम कहानी उसने दुनिया के आगे बयान की और नया नारा दिया- व्यक्तिगत स्वामित्व प्रकृति की देन नहीं मानव की अपनी सृष्टि है जिसे सम्पूर्णतः उन्मूलित किए बिना मानवता को त्राण नहीं मिलेगा। यह मौत जैसा है मानव के लिए। अतः उसे एकदम समाप्त, एकदम नेस्तनाबूद किए बिना न्याय और समता की स्थापना नहीं हो सकती। उसने तात्कालिक उपाय बताया जनक्रान्ति का, बहुसंख्यक जनता द्वारा रक्त क्रान्ति का बहुसंख्यकों द्वारा अल्पसंख्यकों शोषकों को मिटाकर सब कुछ अपने हाथ में लेकर सम्पूर्णतः समाजीकरण करने का। उसके आधार पर रूस और चीन में क्रान्तियां हुईं। संसार में साम्यवाद की स्थापना के लिए क्रान्तियों एवं संघर्षों में अब तक दस करोड़ मानवों का संहार हो चुका है।

मार्क्स की कल्पना थी कि क्रान्ति के बाद सम्पूर्ण सम्पत्ति पर सामाजिक अधिकार स्थापित हो जाएगा और व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुरूप ले सकेगा। उस सार्वजनिक भण्डार से तथा अपनी सम्पूर्ण क्षमता और योग्यता से श्रम समर्पित होकर उसे बढ़ाता रहेगा। उस व्यवस्था में पैसा नहीं होगा। वस्तुएं होंगी जो आवश्यकता अनुसार सबके लिए सुलभ होंगी अधिक किसी के पास नहीं होंगी। खरीद विक्री की प्रणाली समाप्त हो जाएगी, न सरकार रहेगी न पुलिस न सेना रहेगी और न न्यायालय। वह मानता था कि भूख और दैन्य से अपराध होते हैं। व्यक्तिगत स्वामित्व से अनैतिकता होती है। यहां पर व्यक्ति भूल गया कि भूख न होने पर भी लिप्सा हो सकती है कि पैसा न होने पर स्वामित्व हो सकता है। अभाव न होने पर भी अपराध हो सकता है। पूंजीवाद समाज की अर्थव्यवस्था मात्र नहीं जैसे कि मार्क्स ने समझा। बल्कि व्यक्ति की लिप्सा, वासना, अहम तथा स्वार्थ केन्द्रित वृत्ति भी है जिसका प्रतिबिम्ब मात्र होती है व्यवस्था और जो हर व्यवस्था में असंख्यक छेद कर रास्ते बना लेती है। अपने लिए क्योंकि व्यवस्था नियामक व्यक्ति होता है। चाहे उसका प्रारूप सामाजिक हो राष्ट्रीय हो या अन्तरराष्ट्रीय यही कारण है कि मार्क्स की कल्पना का समाज अभी दूर है।

## **संग्रह मात्र विषमता का जनक**

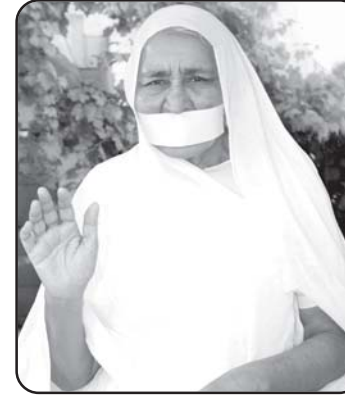
मार्क्स से भी पच्चीस सौ वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी इस धरा पर आए। मानवता के इतिहास में सर्वप्रथम उन्होंने मंच से घोषणा की कि समता धर्म है विषमता अधर्म। प्रेम

धर्म है लिप्सा अधर्म है। स्वामित्व विसर्जन धर्म है संग्रह व शोषण अधर्म। पहली बार उन्होंने कहा कि धन का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं। धन को धर्म की धुरा का अधिकार कैसा-धणेण किं धम्म धुरा हिगारे? मार्क्स से भी बढ़कर उन्होंने कहा स्वामित्व व्यक्तिगत हो या सामाजिक राष्ट्रीय या अन्तरराष्ट्रीय, वह झूठ है, प्रकृति के खिलाफ है जीवन का बन्धन है। उन्होंने अपरिग्रह का सूत्र दिया। परिग्रह का अर्थ वस्तुएं नहीं, उन पर स्वामित्व है। व्यक्तिगत सत्ता का आरोपण उसका आग्रह है, उसकी अनुभूति है। समाज पर उसका शोषण एवं विषमता मूलक प्रभाव है। अपरिग्रह का अर्थ है स्वामित्व का सर्वतोभावेन सम्पूर्णतः विसर्जन मन के उन स्तरों से भी जहां से वह क्रिया के माध्यम से उतरता है, व्यवस्था और संग्रह क्रम बनाता जाता है एवं व्यवस्था को अधिकाधिक हिंसक अधिकाधिक शोषक।

मार्क्स व्यवस्था को बदलने तक सीमित रहा। उसका सूत्र था कि व्यक्ति व्यवस्था की उपज है। व्यवस्था को बदलो व्यक्ति सम्पूर्णतः बदल जाएगा। महावीर ने कहा कि वास्तविकता उससे उल्टी है। व्यवस्था तो व्यक्ति ने बनाई है। व्यक्ति बदलेगा वह स्वतः बदलेगी। अन्यथा उसे बदलते जाने से कुछ नहीं होगा। व्यक्ति उसमें से रास्ते निकालता जाएगा और वह छिन्न-भिन्न होती जाएगी। सीधी सी बात है। अन्तः परिवर्तन होगा तो जीवन परिवर्तन हो जाएगा सामाजिक आर्थिक सारे स्तरों पर। सांप के भीतर नई चमड़ी आने पर पुरानी चमड़ी निकल आती है। अन्यथा खींचने पर मांस रक्त भी बहेगा और मर जाएगा वह। इतिहास साक्षी है कि इस कालजयी सत्य का। इतिहास साक्षी है मार्क्स की अधूरी व्यवस्था के प्रतिफल का। साक्षी होगा इतिहास कि मार्क्स का विकल्प महावीर हैं चाहे वह जब भी हों। जहां भी उद्योग व्यापार के विकास को महावीर कहीं अवरुद्ध नहीं करते लेकिन यन्त्र मानव पर हावी हो जाए और उसी का अवमूलन कर दे यह उन्हें काम्य नहीं। अतः सर्वप्रथम महारंभ के अन्तर्गत उन्होंने विशाल और पेचीदा यन्त्रों को नकारा है। देश परिमाण वृत्त के अन्तर्गत व्यापक क्षेत्र विस्तार को नकारा है। जो अन्ततः उद्योग व्यापार एवं धन के केन्द्रीकरण का हेतु बनता है। शोषण और विषमता साधक होता है। वन प्रदेशों को जलाने, काटने, पशु पक्षियों के आहार जल के काम आने वाले भू भाग को काम में लेने, यहां तक की पशुओं को अतिभार लादने को भी महावीर ने अतिचार के रूप में निषिद्ध किया है। वेश्यावृत्ति, जुआ तथा किराए तक को अतिचार की संज्ञा दी है। खेती को महावीर ने कहीं वर्जित नहीं किया है। उनके आनंद जैसे अनेक श्रावक थे। जिनके सैकड़ों हल चलते

## लोक दिखाऊ शादी

### ○ संघ पर्वतिनी साध्वी मंजुलाश्री



अरूणा पूरी-पूरी रात फफक-फफक कर रोती रहती है। लेकिन उसको तसल्ली देने वाला कोई नहीं है। शादी के बाद पहली बार ही तो ससुराल आई है। अभी इतना साहस भी नहीं जुटा पाई कि अपनी व्यथा किसी के सामने प्रकट कर दे। दिन भर सजी संवरी पीढ़े परस बैठी रहती है। ननद देवर सब चुटकियां लेते रहते हैं।

रात को अरूणा अकेली हो जाती है। तब उसकी एक नजर घड़ी पर जाती है और दूसरी नजर रोहिताश को टटोलती है। ऐसे करते-करते

रात के एक दो बज जाते हैं। रोहिताश का कोई ठिकाना नहीं। अरूणा सिसकियां भरती-भरती करवटें बदलती-बदलती कब नींद की गोद में चली जाती है। उसको स्वयं को भी पता नहीं चलता।

सुबह सूजी हुई आंखें, मुरझाया हुआ चेहरा खुद ही बता देता है कि वह नवोढ़ा कितनी व्याकुल है। फिर भी अरूणा ने साल भर किसी को पता नहीं लगने दिया कि उसके भीतर भी अथाह पीड़ा है। साल भर बाद उसके बीमार होते ही शरीर और चेहरे की गायब होती रौनक ने सबको सब कुछ बता दिया।

बताना किसको था? सब जानते थे रोहिताश की आदतों को। वे माता-पिता सचमुच दुश्मन होते हैं जो अपने बेटे के लक्षणों को जानते हुए भी उसकी शादी करके एक लड़की का जीवन बर्बाद कर देते हैं।

रोहिताश के माता-पिता और भाई-बहनों को मालूम था कि उसका पहले से ही एक लड़की से नाजायज सम्बन्ध है। वह इस शादी के लिए तैयार नहीं था। घर वालों ने जबरदस्ती उसकी शादी अरूणा के साथ कर दी थी।

अरूणा ने जब प्रत्यक्ष रूप से रोहिताश के चाल चलन को देखा तो एकाध बार टोका भी। लेकिन उसने अरूणा की जुबान यह कहकर बन्द कर दी कि मैंने तो तुम्हारे साथ लोक दिखाऊ शादी की है। मेरी वास्तविक शादी तो पहले ही हो चुकी है। बेचारी अरूणा बोले तो क्या बोले, करे तो क्या करे?

थे। अनेक गोकुल पलते थे। कालान्तर में न जाने क्यों जैन समाज ने इसे वर्जनीय मान लिया और ब्याज को अहिंसक व्यवसाय की संज्ञा देकर प्रमुखता से अंगीकार कर लिया। शोषण और उत्पीड़न सर्वोपरि हिंसा है। यह उनका स्पष्ट अभिमत है वह न हो, शेष कुछ भी हो।

### अपरिग्रह विषमता का समाधान

उपलब्ध आय के लिए महावीर ने वृत्ति के रूप में अपरिग्रह अर्थात् स्वामित्व शून्य भावना तथा व्यवहार के रूप में अपने उपभोग के लिए व्यवहृत राशि का सीमाधिकरण उपभोग परिभोग परिणाम व्रत इच्छा परिणाम व्रत के रूप में प्रस्तावित किया है। जिसे मानकर अगर महावीर के एक लाख अनुयायी भी चले तो देश में एक व्यापक सामाजिक आर्थिक क्रान्ति आ सकती है। जिसकी गति कई सहस्राब्दियों के इतिहास में मिशाल तक शायद ही मिल सके। लेकिन यहां हम महावीर के विपरीत ध्रुव पर खड़े हैं। धर्म के लिए महावीर धन की आवश्यकता को सीधे नकारते हैं। वे दया करने के लिए नहीं अपितु हिंसा न करने के लिए, दान करने के लिए नहीं अपितु शोषण न करने के लिए कहते हैं। वे धन का वितरण करने के लिए नहीं, मूल्यतः संग्रह न करने की आवाज उठाते हैं। धन को धर्म से एकदम असम्बद्ध मानते हैं। ग्रहण के बाद उसका धर्म के नाम पर वह व्यय करने की नहीं, ग्रहण ही न करने, त्याग करने दान करने के पहले, अर्जन न करने की प्रेरणा देते हैं। धन से न अहिंसा होती है न सत्य निष्पन्न होता है। उसका स्वामित्व हिंसा है। उसका अर्जन परिग्रह है उसका अन्यायपूर्वक संग्रह स्तेय है। वे दान या विसर्जन से पूर्व ही अर्जन का निरोध कर योग क्षेम के लिए न्यूनतम उपयोग की सीमा तक बांध लेते हैं। मार्क्स का साम्यवाद अपने आप समाहित है महावीर की आर्थिक जीवन प्रकल्पना में।

*पानी के बदले आग बरसानेवाला अम्बर नहीं चाहिए,  
हँसते चमन को दलदल बनानेवाला समन्दर नहीं चाहिए,  
चैन से जीने न देकर जो फूट डालते हैं हमारे में  
वैसे धर्माचार्य तो क्या हमें पैगम्बर भी नहीं चाहिए।*

○ आचार्य रूपचन्द्र

## दुर्जनता पर सज्जनता की विजय

○ साध्वी मंजूश्री

कुछ व्यक्ति संसार में ऐसे भी होते हैं जो गृहस्थ जीवन में भी रहते हुए सन्यासी जैसा जीवन जीते हैं। परिग्रही होते हुए भी आत्मा से अपरिग्रही होते हैं। ऐसे बिरले लोगों में से एक श्रावक हुए हैं श्री नेमीचन्द्र जी जैन।

एक समय की बात है श्री नेमिचन्द्र जी रात में सो रहे थे। लेकिन नींद नहीं आ रही थी। रात्रि का दूसरा प्रहर चल रहा था, इस प्रहर में चोर चोरी करते हैं। उस रात एक चोर श्री जैन के घर में घुस गया। उसने धीरे-धीरे सारा सामान गठरी में बांध लिया। गठरी भारी हो गयी। उससे उठ नहीं रही थी। श्री जैन जगे हुए सब देख रहे थे। वे धीरे से उठे चोर के पास आए। मालिक को आता देख चोर भागने लगा। श्री जैन ने कहा कि भाई भागो मत। मैं तुम्हें पकड़ने नहीं, गठरी उठवाने आया हूँ। चोर हैरान होकर मालिक का मुंह ताकने लगा। श्री जैन ने गठरी उठाई और चोर के सिर पर रख दी।

चोर गठरी लेकर चला। वह अभी कुछ दूर चला था कि उसके मन में विचार उठा कि एक तो वह व्यक्ति जिसने अपना धन बिना किसी हिचकिचाहट के मुझे उठवा दिया। उसके मन में धन के प्रति जरा भी आसक्ति नहीं। और एक मैं हूँ। हाय! धिक्कार है मुझे। मैं यह धन नहीं लूंगा। ऐसा सोचकर वह पुनः श्री जैन के घर गया। उसने धन की गठरी श्री जैन के सामने रख दी और बोला कि सेठ साहब मैं आपका धन नहीं लूंगा। श्री जैन ने कहा कि भाई, चोरी से नहीं तो मेरे हाथ से दिया हुआ ही ले जाओ। तुम इस धन से व्यापार करो। एक सभ्य नागरिक की तरह जीवन जिओ। समाज में सम्मान पूर्वक रहो। फिर कभी धन की जरूरत पड़ जाए, तो हमारे पास आकर ले जाना लेकिन चोरी कभी मत करना। चोरी का धन कभी फलता नहीं है। कहावत है कि चोरी का धन मोरी में जाता है। श्री जैन की सज्जनता का चोर पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने सदा के लिए चोरी करना छोड़ दिया और श्री जैन को अपना गुरु मानकर सदैव उनसे मार्ग दर्शन प्राप्त करता रहा।

घरवालों ने सोचा जब शादी कर देंगे तो रोहिताश अपने आप सही रास्ते पर आ जाएगा। लेकिन रोहिताश तो अब और भी अधिक निरंकुश हो गया था।

पति की चहेती न होने के कारण अरूणा धीरे-धीरे परिवार में भी उपेक्षित होने लगी। सास-ससुर का पहला फर्ज तो यह था कि रोहिताश के पीछे अरूणा को लाते ही नहीं। फिर अगर अपने खानदान की ऊंचाई को बरकारार रखने के लिए रोहिताश की अरूणा के साथ दिखावटी शादी की, तो कम से कम अरूणा को भी संभालते। बेटा न माने इसलिए उसको उपेक्षित छोड़ देना कितना बड़ा अन्याय है। जब सास-ससुर, माता-पिता अरूणा को नहीं पूछते तो देवर, जेट व देवरानी-जिठानी को क्या पड़ी थी।

मन ही मन घुटने से अरूणा को दौरे पड़ने लगे। सास-ससुर ने उसे यह कहकर उसके माता पिता के यहां भेज दिया कि वहां थोड़ा खुला वातावरण रहेगा तो स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा।

पीहर भेजा तो ऐसा भेजा कि वापस बुलाया ही नहीं। अरूणा के मां-बाप बेचारे क्या करें। जो कुछ था अरूणा की शादी में लगा दिया। और वह सारा उसके ससुराल रह गया। कोर्ट में लड़ने की हिम्मत नहीं। बूढ़े भी हो गए। भाई और भाभी जीवन भर इस बोझ को ढोने को तैयार नहीं। बेचारी अरूणा किस आशा पर दिन काटे। उसके पास शिक्षा की भी कोई डिग्री नहीं कि कहीं नौकरी कर ले।

ऐसे अभिशप्त जीवन से उकता कर कोई आत्महत्या की बात सोच ले तो कोई आश्चर्य नहीं। लेकिन अरूणा ने संतों से सुन रखा था कि परिस्थितियों से घबरा कर आत्म हत्या करना महापाप है और इससे आगे की गति बिगड़ती है। अतः वह आत्महत्या की हिम्मत भी नहीं जुटा सकी।

आखिरकार अरूणा मन मारकर घुटन भरा जीवन जीने लगी। उसकी सांप छछुन्दर वाली गति हो गई। न जीते बनता और न मर ही सकती थी। अपनी लाड़ली की ऐसी स्थिति को देखकर मां बाप भी अधिक जी नहीं सके। भाई-भाभी की दिन भर झिड़कियां खाती हुई अरूणा एक कुत्ते से भी बदतर जीवन जीने को मजबूर हो गई।

मानव समाज अबोधता को त्यागकर 'रोहिताश-अरूणा' प्रसंग से अविनाशक रमज ग्रहण कर पारिवारिक व सामाजिक क्षेत्र में समरसता निर्माण हेतु समय, सद्कर्म, स्नेह, भगवत श्रद्धा विश्वास व इंसानियत आदि मानव धर्म के उदान्त लक्षणों को अपनाते हुए व्यक्ति खुशहाली को साकार कर प्रभु आशीष का भागी बने..., जो आत्म आस्था का मार्ग है।



प्रेम हमारी साधना है, प्रेम हमारा पंथ है  
जो भरा हो प्रेम से वह ही हमारा संत है।।

प्रेम मंदिर, प्रेम मूरत, प्रेम ही भगवान है  
प्रेम के ही थाल में सब पूजा का सामान है  
प्रेम दीपक, प्रेम, बाती प्रेम पावन मंत है।

वेद हो या वीरवाणी, रामायण या गीता हो  
वो न समझेगा उन्हें, जो प्रेम से घट रीता हो  
प्रेम का जो पाठ पढ़ाए, वही सच्चा ग्रंथ है।

नफरत के जो गीत गाते, मजहब वे सब झूठे हैं  
धर्म के नाम पर हम, आपस में क्यों रूठे हैं  
वैर का पतझर मिटे तब, खिलता प्रेम बसंत है।

प्रेम के बल टिके ये धरती आसमान हैं  
ढाई आखर सीखा जिसने उसका रूप जहान है  
प्रेम की महिमा सनातन आदि है ना अंत है।



दुनिया बड़ी विचित्र है। इसको समझना बड़ा ही कठिन है। एक तरफ तो अनेकानेक आविष्कार मानव की सुविधाओं का दायरा बढ़ा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ उससे होने वाले कुप्रभावों से हम बचते नजर नहीं आ रहे हैं। प्रारंभ में हम आदि मानव हुआ करते थे। उस समय कोई सभ्यता संस्कृति नहीं थी। नंगा रहना, शिकार करना, जंगली जानवरों जैसा व्यवहार करना हमारी प्रकृति थी। फिर अग्नि का आविष्कार हुआ। पहिया साइकिल, स्कूटर, प्लेन, ट्रेन, समुद्री जहाज, बिजली आदि अनेक आविष्कार हुए। ठीक उसी प्रकार मनोरंजन के क्षेत्र में सिनेमा टी.वी. टेप रिकार्डर आदि का विकास हुआ। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में टेलीफोन, इंटरनेट, कम्प्यूटर इत्यादि का विकास हुआ। चिकित्सा के क्षेत्र में हार्ट सर्जरी बाईपास सर्जरी, अंग प्रत्यारोपण, अल्ट्रासाउण्ड अनेक प्रकार के टेस्टों द्वारा जीवन को बचाने के लिए अद्भुत सफलताएँ हाथ लगीं। आज इन आविष्कारों द्वारा हमारा जीवन कितना सुलभ हो गया है कि हमें अपने जीवन में सब कुछ मिलना संभव हो गया है।

इधर सदियों से अनसुलझे ब्रह्मांड के रहस्यों को सुलझाने में जो दस हजार से ऊपर पूरे विश्व के वैज्ञानिक लगे हुए हैं। उसको सुलझाने में एक बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। वैज्ञानिकों ने हाल ही में प्रोटोन कण को आपस में टकराया है। उससे प्राप्त कण का नाम (गोड प्रेक्टिस) दिया है।

जिसके सहारे हम सृष्टि के रहस्यों को समझ सकेंगे। यानि यह पृथ्वी कैसे बनी। ग्रह नक्षत्र तारे कैसे बने। तथा कब तक रहेंगे। अभी तक इन सब प्रश्नों का उत्तर केवल ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों के आधार पर खोजते थे। परन्तु अब हम इससे वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणित कर पाएंगे। प्रोटोन की तरह इलैक्ट्रान कण भी हैं। न्यूट्रान अपने में उदासीन रहता है। इलैक्ट्रान चारों तरफ चक्कर काटता रहता है जो प्रोटोन के पास ही है।

कृषि के क्षेत्र में हरित क्रान्ति, दुग्ध उत्पादन के क्षेत्रों में श्वेत क्रान्ति, दलहन एवं तिलहन उत्पादन के क्षेत्रों में पीत क्रान्ति के द्वारा हमने आत्म निर्भरता पाई। फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए खाद एवं कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से उपज तो बढ़ती है साथ ही दुष्परिणाम के रूप में मिट्टी की उर्वरा शक्ति धीरे-धीरे कमजोर एवं वायु का प्रदूषण लगातार बढ़ता जा रहा है।

विकास के चरण में अत्यंत अत्याधुनिक फैक्ट्रियों को लगाया उससे उत्पादकता तो बढ़ी पर इसके गंदे पानी से नदियां प्रदूषित हो गईं तथा इसके धुएँ से वायु भी प्रदूषित हो गई है। ऊर्जा की बढ़ती मांग के चलते कि जो मात्रा है इसके सहारे हम अधिक से अधिक 50 वर्षों तक अपना काम चला सकते हैं। इसके कुप्रभाव से वायु में कार्बनडाई आक्साइड, सल्फरडाई आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड की जो मात्रा बढ़ी है उससे वायु प्रदूषित हो गई है। इसका परिणाम ग्लोबल वार्मिंग या ग्रीन हाउस इफैक्ट के रूप में सामने आ रहा है। वायु प्रदूषण के चलते अनेक बीमारियां फैल रही हैं। अम्लीय बारिश हो रही है जिससे फसल नष्ट हो रही है। ताजमहल जैसी हमारी अनमोल धरोहरों की सुंदरता नष्ट हो रही है। मौसम का रूप बदल रहा है। अत्याधिक गर्मी एवं अधिक ठंडी प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ रही है। इस ग्रीन हाउस इफैक्ट के कुपरिणाम के चलते हमारे वायु मंडल के ऊपर छतरी के रूप में ओजोन की परत है। उसमें छिद्र हो गए हैं जो निरंतर चौड़े होते जा रहे हैं। यह गंभीर चिंता का विषय है। क्योंकि यहीं ओजोन परत सूर्य से आने वाली पैरा बैंगनी किरणों को अवशोषित करती है और हमें त्वचा की कैंसर से बचाती है।

इसी इफैक्ट के कारण नार्थ पोल ग्लेशियर में ज्वालामुखी विस्फोट हो रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं और समुद्र तल ऊपर की ओर बढ़ रहा है। उठ रहा है जिसमें समुद्री भूभाग का समुद्र में विलय हो जाएगा। परिणामस्वरूप अनेक समुद्री देशों तथा उनके किनारे बसे नगरों-महानगरों आदि का अस्तित्व ही मिट जाएगा। इसके परिणाम हमने विगत दिनों यूरोप में देखे हैं कि पूरे यूरोप के ऊपर राख की चादर गुब्बारे के रूप में फैल गई थी जिससे यूरोप के लंदन, स्वीडन, डेनमार्क, आदि देशों का सम्बन्ध पूरे विश्व से कट गया था। सभी उड़ने वाली उड़ाने बंद कर दी गई थीं। पूरे यूरोप में कोहराम मचा हुआ था। बार-बार प्रत्यंकारी बाढ़, भयंकर सूखा, महामारी तथा अनेक प्रकार भयंकर भूकंप जो जल और थल दोनों में प्रलय मचा रहे हैं। इस तरह प्राकृतिक प्रकोप हमें अंदर से भयभीत कर रहे हैं।

विश्व स्तर पर अनेक प्रयास हुए। सारे विश्व के पर्यावरण मंत्री इस सार्थक प्रयास में जुटे रहे कि ग्लोबल वार्मिंग को कैसे कम किया जाए। मगर विकसित देशों के अड़ियल रूख के कारण इसमें अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया। सारी दुनिया जानती है कि ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने में 92 प्रतिशत योगदान विकसित देशों का ही है।

आज हमें प्रकृति के साथ तालमेल की जरूरत है, खिलवाड़ की नहीं। प्रकृति हमें उपयोग का आदेश देती है परन्तु हम उसे दोहन करने पर तुल गए हैं जिसके भयंकर दुष्परिणाम होने की आशंका है। प्रकृति हमसे निवेदन करती है कि हे मानवो, सुधार जाओ अन्यथा हममें सुधारने की ताकत है, हम संतुलित कर लेंगे। प्रकृति के किसी एक विषय को लेकर वैज्ञानिक शोध करते हैं, इस आधार पर सृष्टि की सृजन सत्ता को चुनौति देना नामुमकिन है। प्रकृति के सामने मानव की शक्ति तुच्छ और नगण्य है। इन सब लक्षणों को देखकर लगता है कि विज्ञान की शक्ति से भी प्रकृति की लीला भयंकर है और इसका निमित्त मानव ही है। यानी विज्ञान और प्रकृति के ऊपर हाबी इंसान की करतूत है जो प्रलय के संकेत हैं।

**-शिक्षक मानव मंदिर गुरुकुल**

## परोपकार की भावना

**-लखविन्दर सिंह**

गंगा के तट पर एक आश्रम था, जिसमें दूर-दूर से छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते थे। एक दिन कुछ शिष्यों को शरारत सूझी। वे गुरु के पास आए और बोले, “गुरुदेव! हम गांव में एक चिकित्सालय खोलना चाहते हैं। हम सभी उसके लिए चंदा इकट्ठा कर रहे हैं। कृपया आप भी योगदान करें।” गुरु ने शिष्यों की बात ध्यान से सुनी। फिर शिष्यों की ओर देखा। थोड़ा मुस्कराए और भीतर कुटिया में गए। कुछ ही पलों में लौटकर आए और शिष्यों से बोले “मैं तुम्हारी अधिक सहायता तो नहीं कर सकता, हां दक्षिणा में एक बार सोने के सिक्के मिले थे, जिन्हें आज तक संभालकर रखा था। ये तुम लोग ले लो।” शिष्यों ने सिक्के लिये और चले गये। दूसरे दिन सभी शिष्य आश्रम में इकट्ठे हुए। जिन शिष्यों ने गुरु से सिक्के लिए थे वे भी आये। बातों ही बातों में गुरु से सिक्के लेने की बात सामने आई और यह राज खुला कि कुछ शिष्यों ने मजाक में ऐसा किया है। कुछ वरिष्ठ शिष्यों को यह बहुत बुरा लगा। इस पर गुरु ने पहले तो ठहाका लगाया और फिर बोले “मुझे कल ही पता चल गया था कि वे झूठ बोल रहे हैं। परंतु उनके परोपकार की भावना का सम्मान तो करना ही था। उनकी इस भावना का सम्मान करने के लिए ही मैंने उन्हें सिक्के दिये थे। विचार झूठा ही सही उनमें परोपकार की भावना तो थी ही।” गुरु की बात सुनकर शरारती शिष्यों ने गुरु के चरणों में गिरकर क्षमा मांगी।

## घरेलू उपायों से स्वस्थ रहें

मौसम के बदलाव के साथ ही फ्लू होने के खतरे बढ़ जाते हैं। ऐसे अनेक उपाय हैं जिनके द्वारा छोटी-छोटी बीमारियों के खतरों को कम किया जा सकता है।

### संक्रमण से बचाती घरेलू औषधियां

किसी भी प्रकार का संक्रमण रोग होने पर हमें यह बात याद आती है कि इलाज से परहेज अच्छा है। संक्रमण बीमारियां हमारे लिए एक बड़ा सिरदर्द रही हैं। पहले जब किसी को कोई संक्रमण रोग हो जाता था तो उसके लिए उचित इलाज की खोज की जाती थी। वैद्य, हकीम और साधु-संत हमेशा से इन संक्रामक रोगों के लिए जड़ी बूटियों के द्वारा चिकित्सा की नई पद्धतियों की खोज में लगे रहते थे। मौसम में बदलाव के साथ ही फ्लू हाने के खतरे बढ़ जाते हैं।

ऐसे अनेक उपाय हैं कि जिनके द्वारा छोटी-छोटी बीमारियों के खतरों को कम किया जा सकता है। घर के वातावरण की साफ सफाई के नीम व कपूर आदि को जलाना चाहिए। नीम एक शक्तिशाली एन्टीबायोटिक होता है। नीम की पत्तियों को पानी में डालकर उस पानी से नहाया जा सकता है। नीम की पत्तियों से फोड़े फुंसियों में आराम मिलता है।

### आंवला

प्रतिदिन आंवले का सेवन करें। आंवला चाहे कच्चा खाएं या भोजन में किसी रूप में लिया जाए। आंवला सेहत के लिए फायदेमंद होता है। याद रखें एक साल से छोटे बच्चे को आंवला न दें। आंवला विटामिन 'सी' का भण्डार होता है और यह खतरनाक बीमारियों से बचाता है। आजकल बाजार में आंवला पाउडर के रूप में रसायन कैंडी जूस व चूरन के रूप में मिलता है। अपने स्वाद के अनुकूल आंवले को प्रतिदिन अपनी डायट में शामिल करें।

### तुलसी

तुलसी के औषधीय महत्व से भला कौन परिचित न होगा। किसी भी तरह के बुखार में यह एक कारगर औषधि है। यह हर घर में मिल जाती है। चार कप पानी में 25 तुलसी के पत्ते उबालें और इस पानी को पिएं बच्चों को इसकी थोड़ी मात्रा दें। इससे बुखार होने के खतरे बहुत कम हो जाते हैं।

### यूक्लिप्टिस

यूक्लिप्टिस के तेल का भी महत्व होता है। किसी भी तरह के खतरनाक जीवाणुओं से बचाव के लिए यह अगर नासिका के अन्दर डाला जाता है तो वायरस के इन्फैक्सन के खतरे

कम हो जाते हैं। एक रूमाल में तेल की कुछ बूंदें डाल कर नाक के पास रखने से यह हमारे श्वास द्वारा पूरे शरीर को संक्रमण मुक्त करने में सहायक होता है।

### काली मिर्च

कालीमिर्च को अपने खाने में शामिल करें। जीरा मोटी इलायची के साथ कालीमिर्च पीसकर भी सब्जी में डाली जा सकती है। इसके अलावा कालीमिर्च को शहद और अदरक के साथ खाने से शरीर निरोगी होता है। दालचिनी और भी स्वास्थ्य के लिहाज से लाभकारी होती है। दो कप पानी में थोड़ी सी दालचिनी उबालें और सुबह के समय उस पानी को पिएं। किसी भी तरह के वायरल इन्फैक्सन बचाव में हल्दी भी काफी सहायक होती है। भोजन में हल्दी का इस्तेमाल जरूर करें। ये तमाम मसाले बीमारियों की रोकथाम में काफी सहायक होते हैं।

-प्रस्तुति : योगाचार्य अरुण तिवारी

## औषधि भी हैं पत्तियां

प्राचीन काल से पेड़-पौधे मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। पेड़ों के फल व फूल, जहां मानव का पेट भरने व मानसिक शांति प्रदान करने में सहायक हैं, वहां पत्तियों की भी हमारे जीवन में विशेष भूमिका है।

ये मानव के स्वास्थ्य के लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। अधिकांश लोग इस बात से अपरिचित हैं कि पत्तियों का उपयोग औषधि के रूप में भी किया जाता है।

- नीम की पत्तियों से साबुन व टूथपेस्ट बनाए जाते हैं। इसकी पत्तियों को पानी में उबालकर उस पानी से नहाने से खुजली आदि में आराम मिलता है। नीम की पत्तियों को सुबह चबा कर खाने से खून साफ होता है व कील-मुंहासे नहीं निकलते। झाईयां व दाग-धब्बे दूर करने में नीम की पत्तियों का लेप लाभप्रद है।
- मुंह के छाले होने पर मेहंदी के पत्तों को पानी में उबालकर इससे गरारे करें। इसके पत्तों को पीस कर सिर पर मलने से सिरदर्द व आंखों की जलन में राहत मिलती है।
- पेचिस रोग होने पर अमरूद के पत्तों का रस उबाल कर पिएं।
- दांत के दर्द में अमरूद की पत्तियां चबाने से आराम मिलता है।
- सिरदर्द होने पर हरे धनिये के पत्तों का रस नाक में टपकायें।
- करेले के पत्तों का रस पेट के कीड़ों को नष्ट करता है।

-प्रस्तुति : ज्योति कानुगा (गरिमा)

## कष्टों में भी धैर्य

○ साध्वी समता श्री

बनारस के एक श्रीमन्त ब्राह्मण का लड़का राजेंद्र तक्षशिला में विद्याध्ययन करने के लिये गया। कई वर्षों बाद जब यह तक्षशिला से पढ़कर घर पहुंचा तो उसे पता लगा कि पिताजी का स्वर्गवास हो गया है। उसने सोचा-जब मेरे पिताजी भी अपने सारे धन को छोड़कर संसार से विदा हो गये हैं, तो फिर मैं भी धन राशि को साथ कैसे ले जाऊंगा? ऐसा सोच उसने धन का परित्याग कर दिया और वह एक बैरागी महात्मा बन गया। ग्रामानुग्राम परिभ्रमण करता हुआ वह एक ऐसे गांव में पहुंचा जहां का राजा विलासी और अधर्मी था। लेकिन राजा का प्रधानमंत्री बड़ा धार्मिक था।

वह चाहता था कि राजा को किसी महात्मा का योग मिल जाये तो इसका कुछ न कुछ सुधार हो जाये। मन्त्री ने उस साधु को जाते हुए देखा तो उसने राजा के बगीचे में ठहरने का निवेदन किया। महात्मा जी उस बगीचे में ठहर गए और अपनी दिनचर्या करने लगे। एक दिन राजा अपनी रानियों को लेकर उस बगीचे में आया और हंसी मजाक करता हुआ एक स्थान पर बैठ गया। वृक्षों की शीतल और सुगंधित वायु से उसे नींद आ गई। रानियां उठ कर इधर-उधर फिरने लगीं। अचानक उस सबकी दृष्टि उस साधु पर जा पड़ी। रानियां राजा से कुछ समझदार थीं। वे योगी के पास गर्वियां और बोलीं- 'महाराज! हमें कुछ धर्म की बात बताओ।' रानियों की विनम्र प्रार्थना पर साधु ने कुछ धार्मिक उपदेश देना शुरू किया।

महात्मा जी की आवाज राजा के कानों में पड़ते ही राजा की आंखें खुल गयीं। उसने सोचा-यह कौन दुष्ट पुरुष है जो मेरी रानियों के साथ मीठी-मीठी बातें कर रहा है? राजा क्रुद्ध होकर साधु के पास आया और बोला 'तेरा धर्म क्या है?' साधु ने कहा- 'राजन्! मेरा धर्म क्षमा और प्रेम है।' राजा ने पुनः उसकी नाक कटवा दी और फिर पूछा- 'बोल तेरा शास्त्र क्या है?'

साधु ने कहा- 'मेरा शास्त्र है अहिंसा और मैत्री।' राजा ने उसके पांव भी कटवा डाले और पूछा- 'बोल, तेरा शास्त्र क्या है?' साधु ने शांति से उत्तर दिया कि मेरा शास्त्र अहिंसा और मैत्री है। मनुष्य जब किसी पर क्रोध करता है और सामने वाला उसे हजम करता हुआ क्षमा रखता है तो आखिर महात्मा की क्षमा के आगे हैरान हो गया और उसको एक लात मार कर चल दिया। इस हृदय विदारक घटना को देखकर रानियां बड़ी दुःखित

हुई- 'हाय! हमारे निमित्त से महात्मा जी को कितना कष्ट सहन करना पड़ा। मंत्री को पता लगते ही वह दौड़ा-दौड़ा और महात्मा जी से क्षमा याचना करने लगा। महात्मा जी अन्तिम श्वास ले रहे थे। महात्मा जी ने कहा- 'मन्त्री! घबराओ मत। तन नश्वर है एक दिन तो जाना ही था। आज नहीं तो कल जाता। यह शरीर मेरा नहीं है, मेरे ज्ञान दर्शन आदि आत्मिक गुण का है।' अन्त में महात्मा जी के मुख से ये शब्द निकले-अर्थात् शरीर को छोड़ दो, पर धर्मशासन को मत छोड़ो। शत्रु से भी मित्रता का व्यवहार करो। कष्टों में भी धैर्य रखो तुम्हारी विजय होगी।

क्षमा खड्गं करे यस्य, दुर्जनः किं करिष्यति' अर्थात् जिसके हाथ में क्षमा रूपी शास्त्र है, उसका बिगाड़ दुर्जन भी नहीं कर सकता। समय पर क्षमा वही रख सकता है, जिसमें आत्मिक शक्ति का प्राबल्य हो। कष्टों में भी क्षमाधर्म को नहीं छोड़ना, आत्म विजयी के लक्षण हैं।

### वजन घटाना है क्या करें

1. खाना खाने से पहले प्लेट भर कर सलाद अवश्य खाएँ। पूरा सलाद खाने के बाद ही भोजन शुरू करें। तब तक आपका पेट लो कैलोरी, एंटी ऑक्सीडेंट तथा विटामिन से भरा-भरा हो जाएगा और वजन घटाने में आसानी रहेगी।
2. खाने से पहले सूप जरूर लें। यह लो कैलोरी फूड आपकी भूख शांत कर देगा और आप ज्यादा अनाज खाने से बच जाएंगे।
3. सारा भोजन तेल के बिना पकाएँ।
4. नाश्ते के दौरान एक प्लेट भर कर फल अवश्य खाएँ। आप तरबूज पपीता, सेब तथा संतरा खा सकते हैं परन्तु उच्च कैलोरी युक्त फल जैसे सेब, केला, चीकू तथा अंगूर न खाएँ। यदि आप इन फलों के बेहद शौकीन हैं तो एकाध टुकड़े का स्वाद ले सकते हैं।
5. दोपहर या रात के खाने के बाद कुछ मीठा खाने की इच्छा हो तो कअे हुए फल ले सकते हैं।

○ सुनन्दा शिवदास  
सेवाधाम हॉस्पिटल

## सकारात्मकता हीरे की मणि है

यह सृष्टि कितनी सुन्दर स्वार्गिक और मधुरिम है। यह प्रभु की सर्वोच्चतं अनुपम कृति है। सकारात्मकता मनुष्य-मनुष्य की पूंजी बन सकती है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण द्वारा अपनी पूंजी में वृद्धि कर सकते हैं। पड़ा-पड़ा पत्ता सड़ जाता है और खड़ा-खड़ा घोड़ा अड़ जाता है। नकारात्मकता आदमी के दुखों की घड़ी है। हम जीवन के प्रति सकारात्मक सोच अपना कर हर दुख और तनाव से उभर सकते हैं। नकारात्मकता वह हथौड़ा है जो हर किसी रंगति के शीशे को तोड़ फोड़ डालता है। सकारात्मकता हीरे की वह मणि है जो शीशे के अनपेक्षित भाग को हटा देती है और अन्य भाग को उपयोगी बना देती है। नकारात्मकता जहर है तनाव और चिंता को बढ़ाने वाली प्रदूषित वायु है। सकारात्मकता सुबह की सैर है। यानि एक हवा सौ दवा। जीवन में वंशानुगत रूप से मिलने वाले रोग और विकार इस कद्र आत्मसात हो चुके होते हैं कि उन्हें हटाना उनसे मुक्त होना व्यक्ति के लिए असाध्य कार्य बन जाता है। पर यदि कैसा भी विकार क्यों न हो, कितना भी गलत वातावरण क्यों न हो, हानि-लाभ की उठा पटक क्यों न हो जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिया अपना कर व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकता है। हमारी मुश्किल यह है कि हम अपनी सोच और विचार को बेहतर बनाने में चालू स्तर की मैगजीन पढ़ने में या दुकानदारी में अपना सारा समय व्यय कर डालते हैं। जीवन को कैसे बेहतर बनाया जाए उसके प्रति न तो जागरूक रहते हैं और न ही सही ईमानदारी से बचने के लिए कोशिश कर पाते हैं। सकारात्मक सोच के माध्यम से जीवन को सत्यम शिवम् सुन्दरम् के मंगलमय पथ की ओर अग्रसर हों। सदा सौम्य और प्रसन्न परिस्थितियों को अपनी प्रसन्नता छीनने का अधिकार न दें। सकारात्मक सोच और जीने की शैली में ही छिपा है- जीवन की हरेक सफलता का राज। वस्तुतः यही है जीने की कला और यही है उसका गुर।

-अनोखी लाल कोठारी

लगता है हर बार मुझे वह झेल रहा है,  
मेरे भीतर-बाहर वह ही फैल रहा है,  
नयनों के सागर में मेरा ज्योति-पुरुष वह,  
लहरों के संग आंख-मिचौनी खेल रहा है।

-आचार्य रूपचन्द्र

## परमपुरुष ने मुझे छू लिया तो यह मेरा अहोभाग्य

○ श्री आनंदमूर्ति

जिस प्रकार दूध में घी व्याप्त रहता है और मंथन करने से ऊपर आ जाता है उसी प्रकार तुममें परमपुरुष व्याप्त है। साधना रूपी मंथन से तुम उनको पा जाओगे। मंथन करने से जो मक्खन निकलता है वह है परमपुरुष। वह तुम्हारे भीतर है, घर के इस देवता को तुम बाहर की पूजा से प्राप्त नहीं कर सकते। यदि ऐसा करते हो तो तुम उससे और दूर हटते जाते हो। लोग कहते हैं यहां तीर्थ है इस कुण्ड में स्नान करने से सौ अश्वमेघ यज्ञों का पुण्य प्राप्त होता है। तामसिक मन और पतित मनुष्य भी यहां पावन होते हैं। पर सच्चा तीर्थ तो आत्म तीर्थ है। जहां पहुंचने के लिए न तो एक पाई खर्च होती है और न ही कोई समय लगता है। कभी-कभी बुनियादी काम करके अधिक साधना करने की इच्छा होती है। इसी को उपवास कहते हैं। इस दौरान मन के भीतर छिपे हुए परमपुरुष के निकट पहुंचने का प्रयास किया जाता है। उपवास का यही सच्चा अर्थ है। इस क्रिया में संतुलित भोजन से सहायता मिलती है। इसका अर्थ यह नहीं कि भोजन नहीं करने से परमात्मा की प्राप्ति होती है। नदी सूख गई है उपर बालू है और उसके नीचे निर्मल जल है। ऊपर से बालू हटाओ और निर्मल जल से अपनी प्यास बुझाओ। मन का मैल दूर करो और आत्मानंद से तृप्त हो जाओ जिस प्रकार अरणि के भीतर अग्नि होती है उसी प्रकार तुम्हारे भीतर परमपुरुष है। साधना रूपी धर्षण से यह अग्नि प्रकट हो जाएगी। एक प्रश्न है कि भगवान को कौन ही सहज पा सकता है। वह ज्ञानी जो धर्म चर्चा किया करता है अथवा कर्मवान जिसका ध्यान अपने कर्म पर रहता है। ज्ञानी के कथित ज्ञान में दो अवगुण होते हैं पहला है आलस और दूसरा है अहंकार। घमंडी ज्ञानी तो परमात्मा से बहुत दूर रहता है। आलस में सबसे अधिक भयानक है अध्यात्मिक आलस। आज देर हो गई साधना नहीं करेंगे। कल ठीक से कर लेंगे। सिनेमा, नाटक, भोजन सबको बराबर समय दिया जाता है और कवैती की जाती है केवल साधना समय में। नींद आती है केवल भागवद् चर्चा के समय पर। वनवास काल में चौदह साल तक लक्ष्मण ने जागकर रात भर प्रतिदिन उनके रक्षक के रूप में पहरेदारी की। एक दिन उनको नींद आ गई। उस पर वीर लक्ष्मण ने धनुष बाण से हमला कर दिया। निद्रा बोली कि आप कैसे वीर हैं महिला पर शस्त्र उठाते हैं। लक्ष्मण जी बोले कि क्षमा कीजिए अभी आप नहीं आइए। जब राम का अयोध्या में राजतिलक हो जाए तब

## उपदेश और व्यवहार

एक जिज्ञासु युवक किसी प्रसिद्ध महात्मा के पास गया और उनसे कुछ उपदेश सुनाने की प्रार्थना करने लगा। महात्मा ने उस युवक को गौर से देखा फिर बोले, 'मेरा पहला उपदेश तो यही है कि आज के बाद किसी से उपदेश मत मांगना।' यह सुनकर युवक हैरानी से बोला, 'क्यों महाराज, उपदेश सुनना तो अच्छी बात है।' उसकी बात पर महात्मा बोले, 'इसका जवाब अभी मिल जाएगा।' कुछ देर सोचने के बाद महात्मा ने उससे पूछा, 'बताओ, सच बोलना अच्छा है या बुरा?' युवक बोला, 'सच बोलना तो अच्छा है महाराज।' महात्मा ने फिर प्रश्न किया, 'चोरी करना ठीक है या गलत?' युवक बोला, 'गलत है महाराज।' महात्मा का अगला सवाल था, 'कटु वचन व मीठे वचनों में कौन सा वचन बोलना अधिक सार्थक है?' युवक बोला, 'महाराज, मीठे वचन बोलना ही अधिक सार्थक है।' इसके बाद महात्मा ने कहा, 'एक अंतिम बात और बताओ पुत्र कि समय का सदुपयोग करना चाहिए अथवा नहीं।' युवक ने जवाब दिया, 'समय का सदुपयोग तो अवश्य करना चाहिए क्योंकि गया समय कभी वापस नहीं आता।' महात्मा बोले, 'तुम सब कुछ जानते ही हो तो अब और क्या उपदेश सुनना चाहते हो? तुम्हें क्या लगता है कि कुछ बड़ी-बड़ी गूढ बातें ही उपदेश हैं? ऐसी बातें सुनने से क्या फायदा जो सुनने में तो अच्छी लगें पर समझ में ही न आएँ और जिनसे हमारे जीवन में कोई अंतर न आए। उपदेश की सार्थकता तभी है जब वह हमारी सोच को, हमारे व्यवहार को बदले। जीवन में छोटी-छोटी बातें ही ज्यादा काम आती हैं, तुम्हें जीवन के मूलभूत गुणों का ज्ञान है, लेकिन मात्र ज्ञान से काम नहीं चलता। उन गुणों को अपने जीवन में भी उतारना चाहिए।' युवक महात्मा का जवाब सुनकर दंग रह गया। उसने महात्मा से कहा कि आगे से वह इस बात का ध्यान रखेगा और जिन सार्थक बातों को वह जानता है, उन्हें अपने जीवन में अवश्य उतारेगा।

-प्रस्तुति : राजेन्द्र मेहरा

क्रोध को क्षमा से, अभिमान को विनम्रता से,  
माया को सरलता से तथा लोभ को संतोष से जीते।

आप आ सकती हैं। फिर जब भरे दरबार में लक्ष्मण उनकी सेवा कर रहे थे। तब निद्रा ने पुनः उन पर हमला बोल दिया। लक्ष्मण ने फिर विरोध किया। तो निद्रा ने पूछा मैं कहाँ जाऊँ लक्ष्मण ने कहा कि जब किसी धर्म सभा में कोई अधार्मिक पहुंच जाए तुम उसी की आंखों पर बैठ जाओ। उसी दिन से निद्रा का यह क्रम जारी है। कर्मवान में एक ही दोष होता है वह है अहंकार। किन्तु भक्त जानता है कि मैं कुछ नहीं हूँ परमपुरुष ही सब कुछ हैं। मैं केवल यंत्र हूँ। वे यंत्र चलाने वाले। कर्म का श्रेय मेरा नहीं है। इसलिए भक्त में अहंकार नहीं आता और आलस्य भी नहीं आएगा क्योंकि ऐसा व्यक्ति सोचेगा कि भगवान का काम मैं नहीं करूँगा तो कौन करेगा। इसके लिए मैं इसका इंतजार करूँ। ऐसे लोग अपने इष्ट के आदेश का पालन करने तक विश्राम नहीं करते।

अधखबड़े जन भगवान को थ्योरी में जानने की कोशिश करते हैं। भगवान तक पहुंचते नहीं वे उनकी सेवा नहीं कर सकते। जब कि कर्मवान भक्त अपने भगवान के सतत सम्पर्क में रहता है। वह कहता कि परमात्मा हमें चोट भी दें तब आनंदित होते हैं। क्योंकि चोट लगते समय उनको हमें छूना ही पड़ेगा। परम पुरुष ने मुझको छू लिया तो यह मेरा अहोभाग्य है वे मुझे सजा दें। मुझे उनका सतत सम्पर्क चाहिए। मैं उनकी जबरदस्ती सेवा करूँगा। मैं चिल्ला चिल्लाकर उनके नाम का कीर्तन करूँगा यही है साधना का मंथन।

## चुटकुले

1. एक लड़का लड़की देखने उसके घर गया कमरे में काफी देर चुप्पी के बाद आखिर लड़की बोली भैया आप कितने भाई बहन हो? लड़का बोला अभी तक तीन ही थे लेकिन अब चार हो गए है।
2. टीचर ने सोनू दे फादर नू स्कूल विच बुलाया। टीचर ने पूछया : तुहाडा बेटा सिगरेट पींदा है। तुहानू पता है? तुसी ओहनू कदे पुछया नहीं। फादर ने जवाब दित्ता : हां पुछया ते है लेकिन मैंनू कदे सिगरेट देंदा ही नहीं।
3. पत्नी- आज रामायण के पाठ में पंडित जी ने बताया कि राम राज्य में शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पिया करते थे। भला यह कैसे हो सकता है? पति:- क्यों नहीं हो सकता? क्यों मैं तुम्हारे साथ नहीं रहता?

## मासिक राशि भविष्यफल-जून 2010

○ डॉ. एन.पी. मित्तल, पलवल

**मेष :-** इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अवरोधों के चलते तथा अथक परिश्रम के पश्चात निर्वाह योग्य आमदनी कराने वाला है। ख्याल रखें, कोई भी कार्य रिस्क लेकर न करें। सट्टे आदि से बचें। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखना मुश्किल होगा। सन्तान की ओर से कोई चिन्ता परेशान कर सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

**वृष :-** इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह धन लाभ दिलाने वाला है। किसी नई योजना का क्रियान्वयन होने से खुशी होगी। रूपये के लेन-देन में सावधानी बरतने की आवश्यकता है। कुछ जातकों का पुराना फंसा हुआ पैसा पट सकता है। परिवार में सामन्जस्य स्थापित करने में कामयाब होंगे।

**मिथुन :-** इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर सीमित आय वाला तथा अधिक व्यय कराने वाला रहेगा। हालांकि कुछ प्रयास सार्थक होंगे किन्तु कोई न कोई मानसिक परेशानी बनी रहेगी। कोई निकटस्थ व्यक्ति भी धोखा दे सकता है। परिवार में सामन्जस्य बिटाना मुश्किल होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

**कर्क :-** कर्क राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह पूर्वार्ध में कतिपय अशुभफल दायक तथा उत्तरार्ध में शुभफलदायक है। नौकरी पेशा जातकों को अपनी पदोन्नति के प्रति आशान्वित रहना चाहिए। विशिष्ट लोगों के सम्पर्क से कार्य बनेंगे। परिवार में सौहार्द बना रहेगा। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनमें सावधानी अपेक्षित है।

**सिंह :-** सिंह राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर सामान्य फलदायक ही कहा जायेगा। आय-व्यय बराबर रहने वाले हैं। परिश्रम साध्य लाभ अवश्य मिलेगा। किसी नई योजना का सूत्रपात होगा। विदेश से कारोबार करने वालों के लिये समय अनुकूल कहा जा सकता है। यात्रा के अवसर आयेंगे।

**कन्या :-** इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम दिलाने वाला तथा व्यय अधिक कराने वाला है। आपको लगेगा कि आपका काम बन रहा है किन्तु बनते-बनते बिगड़ भी सकता है। जो भी आय होगी जिनमें सावधानी आवश्यक है किसी न किसी बात को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

**तुला :-** तुला राशि के जातकों के लिए यह माह व्यवसाय-व्यापार की ओर से मिले जुले फल देने वाला है। मित्रों की सहायता से कार्य में सफलता मिलेगी। कुछ जातकों की नई योजनाओं का क्रियान्वयन होगा वहीं कुछ जातक अपने क्रोध पर काबू न रख पाने के कारण नुकसान उठायेंगे। घर-परिवार में मन मुटाव का वातावरण बनेगा।

**वृश्चिक :-** इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आंशिक लाभ-प्राप्त कराने वाला है। खर्चा विशेष होगा। परिवार में असामन्जस्य व आर्थिक संकट की स्थिति बनेगी। धन लाभ के कई अवसर यूं ही हाथ से निकल जायेंगे। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। जीवन साथी का ऐसे समय में सहयोग मिलेगा।

**धनु :-** इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह पूर्वार्ध में कुल मिलाकर लाभालाभ की स्थिति रहेगी। व्ययाधिक्य भी रहेगा। शत्रु अवरोध पैदा करेंगे। पर आप उन्हें दूर कर लेंगे। कुछ जातकों का खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त होगा। मान प्रतिष्ठा भी बनी रहेगी। मानसिक उद्विग्नता बनी रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

**मकर :-** इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह परिश्रम साध्य लाभ करानेवाला है। कुछ समस्याओं के समाधान मिलेंगे। किन्तु व्यय की अधिकता के कारण मन परेशान रहेगा। कुछ अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। परिवार में समस्या बनेगी पर समाधान निकल आयेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

**कुम्भ :-** इस राशि के जातकों के लिए यह माह व्यवसाय की ओर से सामान्य ही कहा जाएगा। शत्रु सिर उठाएंगे किन्तु प्रभावहीन साबित होंगे। कुछ जातकों के रुके हुए काम बनेंगे। इस माह का पूर्वार्ध, उत्तरार्ध से अच्छा है। परिवार की समस्या का समाधान निकल आयेगा। दाम्पत्य जीवन में भी नोक झोंक के चलते सामन्जस्य बना रहेगा।

**मीन :-** मीन राशि के जातकों के लिए यह माह व्यापार-व्यवसाय की ओर से अवरोधों के चलते निर्वाह योग्य धनलाभ कराने वाला है। कुछ जातकों की नई योजनाएं कार्यान्वित होंगी। कुछ जातकों को रूका हुआ पैसा मिलने की खुशी होगी। किसी नये व्यक्ति के मिलने से व्यवसाय में फायदा हो सकता है। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। पारिवारिक सम्पत्ति को लेकर कोई कलह हो सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

-इति शुभम्

## आचार्य महाप्रज्ञ जी का स्वर्गारोहण

महामनीषी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का दिनांक 9 मई 2010 को सरदारशहर में हृदय गति रूक जाने से अचानक स्वर्गवास हो गया। इस प्रसंग पर आचार्य महाश्रमणजी तथा साध्वी-पमुखा कनकप्रभाजी के नाम अपने संवेदना-संदेश में आचार्य श्री रूपचन्द्र जी एवं संघ प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुला श्री जी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के स्वर्गारोहण के साथ ही एक बहुश्रुत युग का अंत हो गया है। न केवल तेरा पंथ संप्रदाय और जैन समाज बल्कि पूरे आध्यात्मिक जगत ने एक महामनीषी व्यक्तित्व को खो दिया है। उनकी विद्वतापूर्ण लेखनी से समाज को सदैव प्रेरणा मिलती रहेगी। संवेदना के इन क्षणों में हम आपके साथ हैं। दिवंगत आत्मा परमात्मा दशा को उपलब्ध हो यही मंगल कामना है। उल्लेखनीय है अग्नि संस्कार के समय विशाल जन समूह के बीच आचार्य रूपचन्द्र जी द्वारा रचित “माटी री आ काया आखिर माटी में मिल जावै है” गीत द्वारा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को अंतिम विदाई दी गई।

### हिन्दू विश्वकोश का लोकार्पण

हरिद्वार महाकुम्भ के अवसर पर भारतीय वाङ्मय परंपरा में एक स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया जब देश भर के मूर्धन्य संतों की उपस्थिति में परमार्थ आश्रम ऋषिकेश के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती के निर्देशन में ग्यारह खंडों में प्रकाशित होने वाले Enclopadia of Hinduism का लोकार्पण नोबल पुरस्कार विजेता विश्व विश्रुत श्री दलाई लामा द्वारा विराट जन मोदिनी के समक्ष 3 अप्रैल 2010 को हरिद्वार में किया गया। इस प्रसंग पर पूज्य आचार्य श्री रूपचन्द्रजी ने अपने वक्तव्य में कहा- पुराण साहित्य में राजा भगीरथ के घोर तप का उल्लेख मिलता है जिसके प्रभाव से मां गंगा का स्वर्ग से धरती पर अवतरण हुआ। उसी गंगा मां के तट पर आज Encslopadia of Hinduism के रूप में ज्ञान गंगा का अवतरण हो रहा है, जिसके साथ भगीरथ के रूप में मेरे आत्मीय स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि जी का तप जुड़ा है। इसलिए स्वामी जी को बहुत-बहुत बधाई।

इस महिमा मंडित आयोजन को संबोधित करने वालों में प्रमुख थे- श्री दलाई लामा, बाबा रामदेव जी, शंकराचार्य स्वामी दिव्यानंद तीर्थ, महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंदजी, निवर्तमान शंकराचार्य स्वामी सत्यमित्रानंद जी, श्री मुरारी बापू जी, स्वामी गुरुशरणानंद जी, श्री रमेश भाई ओझा, भारत के पूर्व उपप्रधानमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री निशंक जी, सिने स्टार श्री विवेक आबेराय, उद्योगपति वी.के. मोदी आदि।

स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि जी का विद्वतापूर्ण संयोजन समारोह की शोभा में चार चांद लगा रहा था। इस विश्व कोष के प्रकाशन से भारत की आध्यात्मिक विरासत की यथार्थ तस्वीर संसार के समक्ष आएगी ऐसा विश्वास है।

### प्रदूषण मुक्त गंगा अभियान

दिनांक 4 अप्रैल रविवार को परमार्थ आश्रम ऋषिकेश के पावन गंगा तट पर सभी मूर्धन्य संतों और राजनेताओं की उपस्थिति में प्रदूषण मुक्त गंगा अभियान का शुभ आरंभ किया गया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने अपने उद्बोधन प्रवचन में कहा- पूरे देश के लिए मां गंगा पूजास्पद है। महाकुम्भ के अवसर पर वैदिक परंपरा में गंगा स्नान को महा पुण्य का कारण माना गया है। आज करोड़ों की संख्या में भक्त गण इस पुण्य लाभ के लिए गंगा तट पर उपस्थित हैं। जरूरी यह है कि विराट भक्त समुदाय किसी भी प्रकार गंगा को प्रदूषित न करने का संकल्प लेकर जाए। यदि ऐसा होता है तो गंगा की शुद्धता, पवित्रता कायम रहने में कोई समय ही न लगेगा। विडंबना यह है कि एक तरफ जो गंगा की पूजा करते हैं वे गंगा जल को प्रदूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। आओ हम संकल्प करें कि न केवल गंगा बल्कि किसी भी नदी के जल को प्रदूषित नहीं करेंगे। न पेड़ पौधों और जंगलों को काटेंगे, न पशु हिंसा और मांसाहार करेंगे। अगर ऐसा होता है तो विश्व पर आया पर्यावरण संकट दूर होने में कोई कठिनाई नहीं होगी। सभी संतों और राजनेताओं के वक्तव्यों के पश्चात हजारों की संख्या में उपस्थित जन समुदाय ने गंगा को प्रदूषित न करने का संकल्प लिया।

पूज्य गुरुदेव तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी श्री अपने सहयोगी साधु साध्वियों के साथ जैन आश्रम नई दिल्ली में तथा सरलमना साध्वी मंजुश्री जी अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ सुनाम पंजाब में सानंद बिराजमान हैं। सेवा साधना की प्रवृत्तियां सुचारू रूप से चल रही हैं।

### पूज्य गुरुदेव की सुनाम पंजाब यात्रा

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी का पंजाब-पदार्पण-कार्यक्रम पांच जून को रहेगा। छह जून, रविवार, प्रातः 10 बजे पूज्यवर के सान्निध्य में मानव मंदिर भवन का नवीनीकरण तथा चित्र-कला वीथि का उद्घाटन पंजाब के लोक-कल्याण मंत्री सरदार परमिन्दर सिंह ढीढसा करेंगे। विशेष यह है कि अपने राजनैतिक जीवन का आरंभ श्री ढीढसाजी ने पूज्यवर के मंगल आशीर्वाद से ही किया था। मानव मंदिर भवन सुनाम के नवीनीकरण तथा कला-वीथि



की साज-सज्जा में सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी के निर्देशन में साध्वी चांदकुमारी जी, साध्वी दीपांजी तथा साध्वी पदमश्रीजी की प्रशंसनीय सेवाएं रहीं।

### साध्वी समताश्री जी हनुमानगढ़ में

पूज्य गुरुदेव के निर्देश के अनुसार साध्वी समताश्री जी की 25.26.27 मई 2010 को हनुमानगढ़ में यात्रा रही। संसार-पक्षीया माताजी लिखमीबाई तथा पूरे परिवार की खुशियों का कोई पार नहीं था। हनुमानगढ़-समाज ने भी साध्वीश्री के प्रवास का पूरा लाभ उठाया। तथा समय-समय पर हनुमानगढ़ आने का आग्रह किया। पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी के मार्ग-दर्शन में चलनेवाली सेवा शिक्षा की प्रवृत्तियों का पूरे समाज ने हार्दिक समर्थन दिया।

### मानव मंदिर गुरुकुल के सहयोगी बनें

- ❖ आप नगद, बैंक या मनीऑर्डर द्वारा अपना सहयोग मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट के नाम प्रदान कर सकते हैं।
- ❖ आप हमारे बैंक खाते में नेट-बैंकिंग, चेक डिपोजिट या नगद डिपोजिट घर बैठे या अपने शहर से दान कर जमा पर्ची अपने साथ रखें और हमसे धन्यवाद पत्र और आयकर बचत प्रमाण पत्र प्राप्त करें। हमारा खाता संख्या है-

व्यवसायी व उद्योगवर्गीय दानदाताओं के लिए 100 प्रतिशत टैक्स बचत 35/AC खाता संख्या-  
HDFC Bank Ac. No. 00322560001495 (RTGS/ NEFT IFC Code: HDFC0000032)

अन्य सभी दान-दाताओं के लिए 50 प्रतिशत टैक्स बचत 80/G खाता संख्या-  
ICICI Bank Ac. No. 004601053164SS (RTGS/ NEFT IFC Code: ICIC0000046)

Kotak Mahindra Bank Ac. No. 02052000000452 (RTGS/ NEFT IFC Code: KKBK0000205)

विदेशीय, अग्रवासी-भारतीय व अन्य विदेश से सम्बन्धित दान दाताओं के लिए FCRA खाता संख्या  
Standard Chartered Bank Ac. No. 54410031391 (SWIFT Code: SCBLINBB544)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

प्रबंधक: मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट

योगाचार्य अरुण तिवारी

+91 9999609878, +91 9811346904

श्रीमान रतनलाल जी पानावाई सेठिया सरदारशहर निवासी दिल्ली प्रवासी के घर अभी कुछ दिन पूर्व एक ऐसा हादसा हुआ कि उनका सबसे छोटा बेटा भाई सुनील कुमार अचानक दिवंगत हो गया। कुछ समय पूर्व ही श्री रतनलाल जी स्वयं भी दिवंगत हो गए थे। थोड़े ही समय के भीतर दो-दो मौतें पूरे परिवार को हिला देती हैं। पर मौत के आगे सब लाचार हैं। किसी का कोई वश नहीं है। बड़े बड़े राजा महाराजा भी इसके सामने घुटने टेक देते हैं।

अभी-अभी श्रीमती पानावाई उनकी सबसे छोटी बहू सुनीता जो सुनील कुमार की धर्म पत्नी हैं आदि परिवार के लोग पूज्य आचार्य श्री रूचंद जी महाराज के दर्शन करने जैन मंदिर आश्रम आए थे। भाई सुनील की बहुत इच्छा थी कि गुरुदेव रूपचंद्र जी महाराज उनके घर पधारें लेकिन जाना नहीं हुआ। किसे पता था कि वह अपनी भावना लेकर ही चला जाएगा। इस अवसर पर परम पूज्य आचार्य रूपचन्द्र जी ने उनके परिवार को सांत्वना देते हुए संसार की सच्चाई के बारे में बताया कि जो आता है वह एक न एक दिन अवश्य जाता है। लेकिन असमय में जाने से सबको तकलीफ होती है। पेड़ का पत्ता सूखने के बाद ही झड़ता है। पर सूखने से पहले झड़ जाए तो उसका दर्द भी होता है। फिर भी जो वस्तु चली गई वह वापस आने की नहीं है, और यह शरीर तो नाशवान है जिस वस्तु का नाश होना ही है वह नाश होगी ही। लेकिन हमारी आत्मा शाश्वत है। आत्मा का नाता रिश्ता जन्मों-जन्मों तक चलता है। अतः इस घटना को लेकर शोक संताप करके उसकी आत्मा को पीड़ा न पहुंचाएं। अब तो आपका यही फर्ज है कि उस आत्मा की शांति और उसके उर्ध्व गमन की कामना करें। गुरुदेव श्री की प्रेरणा से उन लोगों को काफी संबल मिला।

इस मौके पर संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुला श्री जी ने भाई सुनील कुमार की विशेषताओं का जिक्र करते हुए उसकी दया परायणता, संवेदनशीलता जरूरत मंदों के प्रति करुणाशीलता की सराहना की। अंत में एक मार्मिक भजन सुनाया। जिसको सुनकर सब गदगद हो गए।

यद्यपि माहोल में श्रीमती सुनीता देवी ने खूब हिम्मत रखी लेकिन कोई वीतराग तो नहीं हैं, मन तो विचलित हो ही जाता है। बहिन सुनीता को अपने परिवार के स्नेह से सम्बल लेना है। धर्म के सहारे मन को शांत करना है। मानव मन्दिर मिशन जैन मंदिर आश्रम श्री रतन लाल जी के परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा के लिए शांति और सदगति की कामना करता है।